आचार्य (संस्कृत साहित्य)

द्विवर्षीय पूर्णकालिक कार्यक्रम

(प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ सेमेस्टर)

नियम, परिनियम एवं पाठ्यक्रम

प्राच्य संस्कृत विभाग

कला संकाय

लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ–226007

आचार्य (संस्कृत साहित्य) पाठ्यक्रम

सेमेस्टर पद्धति को लागू करने की दृष्टि से आचार्य (संस्कृत–साहित्य) के प्रमुख पाठ्यक्रम को सी0बी0सी0एस0 पद्धति के अनुसार परिवर्तित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम द्विवर्षीय पूर्णकालिक कार्यक्रम है। प्रत्येक वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। जिन्हें प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के रूप में जाना जायेगा। प्रत्येक सेमेस्टर 24–24 क्रेडिट का होगा। पूरे कार्यक्रम को 96 क्रेडिट प्रदान किये जायेंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में 6 (Six) प्रश्नपत्र होंगे। पाठ्यक्रम में Core-Course अर्थात् मुख्य विषय के अतिरिक्त GE, DSE, Value Edded एवं Skit Enhancement के कोर्स भी सम्मिलित किये जा रहे हैं। जिनका विस्तृत विवरण आगे दिया जायेगा।

Programme Out Come

आचार्य (संस्कृत साहित्य) कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी की योग्यता:–

- इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी संस्कृत साहित्य की विविध विशेषताओं का ज्ञाता हो सकेगा।
- कार्यक्रम भारत के प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति का परिचायक है। अतः विद्यार्थी भारतीय संस्कृति से पूर्ण परिचित हो सकेगा।
- समाज के विविध पक्षों का प्रबल पक्षधर है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी सभी प्रकार के रिश्तों एवं व्यवहार को जानने में सक्षम होगा।
- पाठ्यक्रम संस्कृत के प्रमुख लक्षण ग्रन्थों का ज्ञान करायेगा।
- कार्यक्रम संस्कृत की सभी विधाओं यथा–उपन्यास, नाटक, नाटिका, महाकाव्य, लक्षण ग्रन्थ आदि का पूर्ण ज्ञान कराता है। अतः छात्र किसी भी क्षेत्र में अपनी विषय विशेषता प्राप्त कर सकता है।

Programme Specific Out Come

आचार्य (संस्कृत साहित्य) कार्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् छात्र विविध क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकता है।

- छात्र प्रशासनिक सेवा में जा सकता है।
- शोधकार्य कर सकता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा सभी क्षेत्रों में अध्ययन–अध्यापन कर सकता है।
- सरकारी क्षेत्र मे भी विविध रोजगारपरक है, यह कार्यक्रम।
- सेना में पौरोहित्य कार्य के लिये धर्मगुरु का पद सृजित है, इस पद हेतु भी वह अर्ह है।
- नाटक–नाटिका आदि के सूक्ष्म तत्वों को समझकर वह इस क्षेत्र में भी अपना भविष्य बना सकता है।
- वह समाज में पौरोहित्य कर्म भी करा सकता है।
- अनुवादक के रूप में भी वह अपना भविष्य सृजित कर सकता है।